अनजाने में हो जाते हैं विकर्म

आज एक व्यक्ति गरीब है, उसकी स्थिति को देखते हुए हमें दया आती है और हमनें उसको दस रूपया दे दिये। सोचा चलो मेरा तो पुण्य जमा हो गया। मैंने तो दान कर दिया ना। लेकिन जरूरी नहीं है कि उससे पुण्य का खाता ही जमा हुआ। वो निर्भर इस बात पर करता है कि वो व्यक्ति दस रूपये का इस्तेमाल किस तरह से करता है। मानो उस दस रूपये से, उसनें एक चाकू खरीदा और चाकू से किसी का खून कर दिया। तो उसने जो पापकर्म किया, उस पापकर्म के भागीदार हम भी बन गए। क्योंकि मैंने दिया तब उसने किया। अगर मैं नहीं देता तो शायद वह करता भी नहीं। इसलिए उसने जो पापकर्म किया उसके भागीदार हम बन गए। इस प्रकार कलियुग में जाने-अनजाने में बहुत पापकर्म हो गए हैं। एक तो जानकर होता है कि हमनें झूठ बोला, किसी को दु:ख दिया, तो ये पापकर्म के खाते में चला जाता है। लेकिन जो अनजानेपन के पापकर्म होते हैं, वो इस प्रकार होते हैं। जहां अनुचित समय और कुपात्र को दिया जाता है, तो उस कुपात्र ने जो कर्म किया उसकी भागीदारी में, वो पापकर्म में हम भी हिस्सेदार हो जाते हैं। कहा जाता कि कलियुग में पात्र देखकर दान करो, नहीं तो दान न करना ज्यादा अच्छा है। कुपात्र को देकर समाज में और भी कुकर्म को बढ़ावा देने के बजाए अच्छा रहे कि दान न करें।

एक बार एक व्यक्ति रोज मछली पकड़ने जाता था। जब वो मछली पकड़कर ले आता तब एक व्यक्ति हमेशा भीख मांगने के लिए खड़ा हो जाता , वह नौजवान था। ये व्यक्ति सोचता था कि चलो इतनी मछली पकड़ी हैं, तो इसको थोड़ा दे देता हूँ वह भी अपना पेट भरेगा। एक दिन आया कि किसी ने उसको कहा कि तू रोज उसको दे रहा है और उसको आलसी बनाता जा रहा है। क्यों नहीं उसको भी मछली कैसे पकड़ी जाती है ये सिखाया जाए। तो वह अपने आप, कम-से-कम इतनी मेहनत करके, अपना पेट तो भरेगा। आज की दुनिया में भी ऐसा हो गया है। हमने कई बार

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु.उषा

किसी को देकर के सोचा, चलो मेरा काम हुआ, मेरे को थोड़ा दान का पुण्य मिल गया। इस तरह से हम देते जाते हैं। लेकिन हम ये नहीं सोचते हैं कि सामने वाले पात्र को आलसी तो नहीं बना रहे हैं। इस तरह से अगर आलसी बनाते जायेंगे, तो आगे चलकर उनके मन में कई प्रकार की विकृतियां उत्पन्न होंगी। आलसी दिमाग शैतान का घर बनता है। इसीलिए क्यों नहीं उसको ऐसे कार्य में व्यस्त किया जाए। व्यस्त करने से उसका मन कम-से-कम शैतान का घर तो नहीं बनेगा। इस प्रकार उनको जीवन में अच्छे मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दे दी जाए। इससे बड़ा पुण्य और कोई हो नहीं सकता है। तो ये पुण्य करो अगर ये पुण्य करने का टाईम नहीं है तो, दान नहीं करना ठीक है। नहीं तो आज कितनों के साथ हमारी भागीदारी हो जाती है। उस भागीदारी में कर्म के फल की भोगना का समय आता है तो भोगना भी भागीदारी में ही चुक्तू करना पड़ता है। जब चुक्तू करने का समय आता है तो भी ऐसे ही आता है। मान लो कि हम कहीं ट्रेन में जा रहे हैं। वहां किसी के बाजु में सीट खाली है और जाकर के बैठ गए। अचानक उसकी बहस किसी तीसरे व्यक्ति से छिड़ जाती है। झगड़ा करने जैसी स्थिति हो जाती है। हाथा-पाई होने लगती है। हम बड़ी अच्छी भावना के साथ जाते हैं कि भई, क्यों झगड़ा कर रहे हो। शांति रखो न, शांति से बैठो न। छुड़ाने जाते हैं । लेकिन वो जो गुस्से का स्वरूप होता है। वो तो पीटता ही है। लेकिन उसके साथ-साथ हमें भी पीट देते हैं। हम सोचते हैं कि हम तो भलाई करने गये थे। लोगों ने हमें ही पीट दिया। अब ये मार क्यों खानी पड़ी। क्योंकि भागीदारी में जो एकाउंट बना, तो चुक्तू करने का समय आया, तो ये भी तो भागीदारी ही है। उसको जानते भी नहीं, पहचानते भी नहीं। जब भिखारी को दिया तो उसको जानते-पहचानते थोड़े ही थे। लेकिन भगीदारी में जो एकाउंट बना तो चुक्तू करने के समय भी भागीदारी में ही चुक्तू करना पड़ता है। इसलिए बहुत सावधानी रखनी चाहिए ताकि हिसाब न बने।

उस वक्त कई बार कई लोग सोचते हैं कि हम तो निर्दोष हैं, हम इसमें कैसे आ गए? हमें क्यों मारा गया? निर्दोष कोई नहीं है। कहीं न कहीं वो एकाउंट बना हुआ है। इसलिए जब चुक्तु करने का समय आया, तो वो चुकाना तो पड़ेगा ही। तो निर्दोष कैसे कहेंगे? जाने अनजाने में किये गये कर्म अवश्य ही फल देते हैं। (क्रमश:)

आप सुखी होंगे या दु:खी – यह फैसला कौन करता है? जवाब है – आप खुद!

एक टेलीविजन कार्यक्रम में एक टेलीविजन हस्ती के अतिथि के रूप में एक बुजुर्ग आदमी आया। वह बहुत दुर्लभ आदमी था। उसकी बातें पूरी तरह से बिना रिहर्सल की थीं और वह बिना तैयारी के बोल रहा था। उसका व्यक्तित्व खुशनुमा और प्रफुल्लित था और उसकी बातें उसके व्यक्तित्व से सहज रूप से बाहर निकल रही थीं। जब भी वह कुछ कहता था तो यह इतना सहज रूप से बाहर निकल रही थीं। जब भी वह कुछ कहता था तो यह इतना सहज, सटीक होता था कि कार्यक्रम देखने वाले लोग हँसी के मारे दोहरे हो रहे थे। वे उसे पसंद कर रहे थे। वे उसे पसंद कर रहे थे। टेलीविजन

सुखी होना आपके हाथ में है

की हस्ती पर भी प्रभाव पड़ा और वह भी दूसरों के साथ उसकी बातों का आनन्द ले रहा था।

आखिर में उसने उस बुजुर्ग आदमी से पूछ ही लिया कि वह इतना खुश क्यों है। उसने पूछा, ''आपकी खुशी का राज क्या है। इतनी चुनौतियों के बीच आप खुश कैसे रह सकते हैं?''यह बहुत साधारण सी बात लगती है और यह लग सकता है कि यह बुजुर्ग आदमी सतही बात कह रहा हो। लोग उतने ही खुश रहते हैं, जितने खुश रहने का विकल्प वे चुनते हैं। अगर आप दुखी रहना चाहते हैं तो आप बड़े आराम से दुखी रह सकते हैं। यह दुनिया का सबसे आसान काम है। सिर्फ दुखी रहने का विकल्प चुन लें। अपने आपसे कहते रहें कि हर तरफ बुरा हो रहा है कोई काम ठीक से नहीं हो रहा है तो आप सचमुच दुखी हो जायेंगे। परन्तु इसके बजाय खुद से कहें, ''हर चीज अच्छी तरह हो रही है। जिंदगी बहुत बढ़िया है। मैं सुखी रहने का विकल्प चुनता हूँ,'' और आप सचमुच सुखी हो जायेंगे।

एक बार ट्रेन के सफर में एक पति-पत्नी अन्य लोगों के साथ सफर कर रहे थे। पत्नी मंहगे कपड़े और जेवरात पहने थी और फर और हीरे उनकी अमीरी की कहानी कह रहे थे। परन्तु वह अपने अपने आपसे दुखी लग रही थी। वह बार-बार तेज आवाज में शिकायत कर रही थी कि डिब्बे में गंदगी थी, सर्विस बहुत खराब थी और भोजन बिल्कुल घटिया था। वह हर चीज के बारे में शिकायत कर रही थी और हर चीज के बारे परेशान दिख रही थी। दूसरी तरफ उसका पति खुशदिल और जिंदादिल इंसान था, जिसमें स्पष्ट रूप से यह क्षमता थी कि वह हर चीज में खुशी ढूंढ लेता था। वह अपनी पत्नी के आलोचनात्मक रवैये पर थोड़ा लज्जित था और कुछ हद तक निराश भी, क्योंकि वह उसे खुश करने के लिए इस यात्रा पर ले जा रहा था। चर्चा बदलने के लिए उसने सफर कर रहे एक सज्जन से पूछा कि किस बिजनेस में हैं। इसके बाद उस पति ने भी बताया कि वह एक वकील है। फिर उसने व्यंग्यात्मक रूप से मुस्कराते हुए कहा -मेरी पत्नी मैन्युफैक्चरिंग बिजनेस में है। सज्जन ने पूछा, 'वे किस चीज का निर्माण करती है?' पति ने कहा, दु:ख का। वे अपने दुखों का निर्माण करती हैं। उस पति यह टिप्पणी बहुत सारे लोगों के बारे में सही है जो अपने खुद के दुख का निर्माण करते हैं। हमें सतत प्रयास करना चाहिए कि हर हाल में सुख का निर्माण करें।

होली से ...

अब संगमयुग है। परन्तु इस रहस्य से अनभिज्ञ लोग स्थूल रंग की होली मानकर समय, धन, वस्त्र और शक्ति व्यर्थ गंवा रहे हैं और जंगल मिलन मना रहे हैं।

होली को ''हो-ली'' के रूप में मनाओ

अब भगवान की आज्ञानुसार आपसी शत्रुता और द्वेष को मिटा देना चाहिए और आपस में जो अनुचित बातें हो चुकी हैं उन्हें ''हो-ली'' समझ कर होली मनानी चाहिए। ऐसी होली मनाने से ही यथार्थ मंगल-मिलन होगा। ''बीती ताई बिसार दे, आगे की सुधि ले; जो बन आवे सहज में ताही में चित्त दे,'' इस शिक्षा पर चलकर और आत्मा की चोली ज्ञान से रंगकर परमात्मा से वास्तविक मंगल-मिलन मनाना चाहिए।

ग्वालियर। फ्यूचर ऑफ पावर कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए साध्वी प्रज्ञा भारती, पूर्व मुख्य न्यायाधीश रोजायले, ब्र.कु.निजार जुमा, ब्र.कु.अवधेश व ब्र.कु.ऐनी।

ग्वालियर। चार्टेड अकाउण्टेंट ऑफ इंडिया में कार्यक्रम के अवसर पर अध्यक्ष कैलाश प्रसाद सारडा, ब्र.कु.शीला, ब्र.कु.अस्मिता, सीए नवीन गर्ग, सीए विकास कुमार जैन।

दमन। नये भवन के शिलान्यास कार्यक्रम में ब्र.कु.सरला दीदी, सांसद लालु भाई, भल्ला साहब, गफूर भाई, ब्र.कु.रंजन, ब्र.कु.कांता तथा अन्य।

सिरोही। राजस्थान की महिला एवं बाल विकास मंत्री मंजू मेघवाल तथा कलेक्टर एम.के.कला द्वारा सम्मानित होते हुए ब्र.कु.बिन्नी।

दिल्ली (हरिनगर)। पूर्व थल सेनाध्यक्ष वी.के.सिंह कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए। मंच पर हैं ब्र.कु.बृजमोहन तथा ब्र.कु.शुक्ला।

बड़ौत। 'टाइम मैनेजमेंट' विषय पर विद्यार्थियों को समझाते हुए ब्र.कु. पीयूष। साथ में ब्र.कु. मोहिनी, ब्र.कु. रामकुमार त्यागी, ब्र.कु. रामानन्द, सुरेश जी।